

बजरंगबाण

और

हनुमानसाठिका स्तोत्र

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

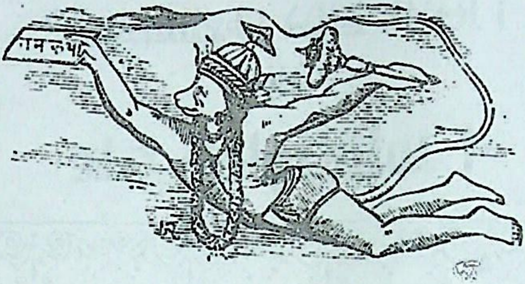
अथ बजरंगबाण ।

और

हनुमानसाठिका स्तोत्र प्रारम्भ ।

मूल्य : ५ रुपये मात्र

श्रीहनुमानजी ।



॥ श्रीहनुमते नमः ॥

अथ बजरंगबाण ।

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीतिते, विनय करै सनमान । तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥ चौपाई—जय हनुमंत संतहितकारी । सुनि लीजै प्रभु

ब० अरज हमारी ॥ जनके कारज विलम
२ न कीजै । आतुर दौरि महासुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिंधु वहि पारा । सुरसा वद-
न पैठि विस्तारा ॥ आगे जाइ लंकिनी
रोका । मारेहु लात गई सुरलोका ॥
बा० जाय बिभीषणको सुख दीन्हा । सीता २
निरखि परम पद लीन्हा ॥ बाग उजारि

सिंधुमहँ बोरा । अति आतुर यमकात-
रि तोरा ॥ अक्षयकुमारको मारि सँहा-
रा । लूम लपेटि लंकको जारा ॥ लाहस-
मान लंक जरि गई । जयजय धुनि सुर-
पुरमें भई ॥ अब विलंब केहि कारन
स्वामी । कृपा करहु उर अंतरजामी ॥
जय लक्ष्मणप्राणके दाता । आतुर होइ

ब० दुख करहु निपाता ॥ जय गिरिधर जय
३ जय सुखसागर । सुरसमूहसमरथ भट
नागर ॥ ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठी-
ले । वैरिहि मारु वज्रकी कीले ॥ गदा
वज्र लै वैरिहि मारो । महाराज प्रभु
बा० दास उबारो ॥ ॐकार हुंकार महावीर
धावो । वज्र गदा हनु विलंब न लावो ॥

ॐ ह्रींह्रींह्रीं हनुमंत कपीशा । ॐ हुंहुंहुं हनु अरिउरसीशा ॥ सत्य होहु हरि सत्य पायकै । रामदूत धरु मारु धाइ-कै ॥ जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ॥ पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥ बन उपवन मग गिरि

ब० गृहमाहीं तुमरे बल हम डरपत नाहीं ॥
४ पाय परौं कर जोरि मनावौं। यहिअव-
सर अब केहि गोहरावौं ॥ जय अंजनि
कुमार बलवंता। शंकरसुवन वीर हनु-
मंता ॥ वदन कराल काल कुलघालक।
बा० राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥ भूत प्रेत
पिशाच निशाचर। अग्नि वैताल काल

मारी मर ॥ इन्हें मारु तोहि शपथ राम-
की । राखु नाथ मरजाद नामकी ॥
जनकसुता हरिदास कहावो । ताकी
शपथ विलंब न लावो ॥ जय जय जय
धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुस-
ह दुखनाशा ॥ शरण शरण कर जोरि
मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोह-

ब० रावौं ॥ उठु उठु चलु तोहि रामदोहाई ।
५ पाय परों कर जोरि मनाई ॥ ओं चंचं
चंचं चपल चलंता । ओं हनु हनु हनु हनु
हनु हनुमंता ॥ ओं हंहं हाक देत कपि
चंचल । ओं संसहन पराने खलदल ॥
बा० अपने जनको तुरत उबारो । सुमिरत
होय अनंद हमारो ॥ यहि बजरंगबान

जेहि मारे। ताहि कहो फिरि कौन उबा-
रे ॥ पाठ करे बजरंगबानकी। हनुमत
रक्षा करै प्रानकी ॥ यह बजरंगबान जो
जापैं। ताही भूतप्रेत सब कापैं ॥ धूप देय
अरु जपे हमेशा । ताके तन नहिं रहै
कलेशा ॥ दोहा–प्रेम प्रतीति धारि कपि

ब० भजै, सदा धरै उर ध्यान। तेहिके कार-
६ ज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

इति श्रीगोसाईंतुलसीदासजूकृत
श्रीहनुमंतबजरंगबाण समाप्त ।

बा०

श्रीरामचन्द्राय नमः ।

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजी कृत-

हनूमानसाठिका स्तोत्र ।

दोहा—वीर बखानउँ पवनसुत, जानत सकल जहान । जै जै जै अंजनि-तनय, संकट हरु हनुमान॥ चौ०—जय जय जय हनुमान अडंगी । महावीर

ह० विक्रम बजरंगी ॥ १ ॥ जय कपीश
७ जय पवनकुमारा । जय जगवंदनशील
अगारा ॥ २ ॥ जय आदित्य अमर
अविकारी । अरिमर्दन जय जय गिरि-
धारी ॥ ३ ॥ अंजनिउदर जन्म तुम
सा० लीन्हा । जय जयकार दवतन कीन्हा
॥ ४ ॥ बाजी दुंदुभी गगन गँभीरा ।

सुरमन हर्ष असुर मन पीरा ॥ ५ ॥
कपिन तेज गढ लंक सकानी । छूटी
बंदि देवतन जानी ॥ ६ ॥ ऋष्य-
समूह निकट चलि आये । पवनतनयके
पद सिर नाये ॥ ७ ॥ वार वार अस्तुति
करि नाना । निर्मल नाम धरा हनु-
माना ॥ ८ ॥ सकल ऋषिन मिलि

ह० अस मत ठाना। दीन बताय लाल फल सा
८ खाना ॥ ९ ॥ सुनत वचन कपि मन
हर्षाना। रविरथ गये लाल फल जाना
॥ १० ॥ रथसमेत कपि कीन्ह अहारा।
सूर्य नहीं तब अतिभयकारा ॥ ११ ॥
विनय तुम्हारि सुने अकुलाने। सब- ८
हिन मिलि तब अस्तुति ठाने ॥ १२ ॥

सकल लोकवृत्तांत सुनावा। चतुरानन
तब रवि उगिलावा ॥ १३ ॥ कहा
बहोरि सुनहु बलशीला। रामचंद्र करि
हैं बहुलीला ॥ १४॥ तब तुम तिनकर
करब सहाई। अबहिं बसहु काननमहँ
जाई ॥ १५ ॥ अस कहि सो निज
लोक सिधारे । मिले सखनमहँ पवन

ह० डुलारे ॥ १६ ॥ खेले खेल महातनु
९ तोरैं । गली करैं बहु पर्वत फोरैं ॥ १७ ॥
जेहि गिरि चरन देहिं कपि राई । बल-
युत भीत रसातल जाई ॥ १८ ॥ कपि
सुग्रीव वालिकी त्रासा । निरखत रहे राम
सा० मगु आसा ॥ १९ ॥ मिले राम लै
पवनकुमारा । अति आनंद भये तेहि

वारा ॥ २० ॥ मणि मुद्रिका रामसन
पाई। सीता खोज चले सिर नाई ॥२१॥
शतयोजन जलनिधि विस्तारा। अगम
अपार देवतन हारा ॥ २२ ॥ जिमि
सर गोखुरसरिस कपीशा। लांघि गये
कपि कहि जगदीशा ॥ २३ ॥ सीता
चरन सीस तहँ नावा। अजर अमरको

आशिष पावा ॥ २४ ॥ रहे दनुज उप-
वन रखवारी । एकते एक महाभट
भारी ॥ २५ ॥ तिनकहँ मारि पवन-
सुत वीरा । जारि लंक उन कियो
अधीरा ॥ २६ ॥ सियाबोध दै पुनि
फिर आये । रामचंद्रके पद सिर नाये
॥ २७ ॥ मेरु उपारि आप छिन माहीं ।

बांध्यो सेतु निमिष इकमाहीं ॥ २८ ॥
शक्ती लागि लषणके जबहीं । राम
बुलाय कहा पुनि तबहीं ॥ २९ ॥
भवनसमेत वैद लै आये । तुरत सजी-
वनकहँ पुनि धाये ॥ ३० ॥ मगमहँ
कालनेमि कहँ मारा । अमित सुभट
निश्चर संहारा ॥ ३१ ॥ आनि सजी-

ह० वन गिरीसमेता । धारि दीन्हे जहँ कृपा-
११ निकेता ॥ ३२ ॥ फनपतिकेर कष्ट
हरि लीन्हा । ऐसो कठिन काज तुम
कीन्हा ॥ ३३ ॥ अहिरावन हरि अनु-
जसमेता । लै गयो जहां पतालनिकेता
सा० ॥ ३४ ॥ तहां रहै देवी अस्थाना ।
दीन्ह चहै बलि काटि कृपाना ॥ ३५ ॥

पवनतनय तहँ कीन गुहारी कटक समेत निशाचर मारी ॥ ३६ ॥ आपन रूप दिखाय बहोरी । राम लषन कीन्हे यक ठोरी ॥ ३७ ॥ सब देवनकी बंदि छुडाये । सो कीरत मुनिनारद गाये ॥ ३८ ॥ अछयकुमार दनुज बलवाना । सानकेतु कहँ सब जग जाना ॥ ३९ ॥

ह० कुंभकरन रावन कर भाई । ताहि
१२ निपात कीन्ह कपिराई ॥ ४० ॥ मेघ-
नादपर शक्ती मारा । पवनतनय सबसों
बरियारा ॥ ४१ ॥ रावन तनय नारां-
तक जाना । पलमहँ ताहि हतो हनु-
सा० माना ॥ ४२ ॥ जहँ लगि नाम दनुज-
कर पावा । पवनतनय सब मारि

नसावा ॥ ४३ ॥ जय मारुतसुत जय
अनुकूला । नाम कृसानु सोक जम-
तूला ॥ ४४ ॥ जहँ जीवनकर संकट
होई । हनुमतनाम जपै सब कोई ॥ ४५ ॥
बंदि परे सुमिरैं हनुमाना । बिपता कटै
धरै जो ध्याना ॥ ४६ ॥ जमको बांधि
बामपद दीन्हा । मारुतसुतव्याकुल बहु

ह० कीन्हा ॥ ४७ ॥ सो भुजबलका कीन्ह
१३ कृपाला । अच्छत तुम्हैं मोर यह हाला
॥ ४८ ॥ आरतहरन नाम हनुमाना ।
सारद ऋषि मुनि कीन्ह बखाना ॥४९॥
संकट रहैं न एक रतीको । जो ध्यावै
सा० हनुमान जतीको ॥ ५० ॥ धावहु देखि
दीनता मोरी । विनती करहुँ नाथ कर

जोरी ॥ ५१ ॥ कपिपति वेगि अनुग्रह
कीजै। सेवक जानि बिपति हरि लीजै
॥ ५२ ॥ रामशपथ मैं तुमहि दिवाया।
जवन गुहार लागु सिय जाया ॥५३॥
बुद्धि तुम्हार सकल जग जाना। मैं
सज्जत बन्धन हनुमाना ॥ ५४ ॥ यहि
बंधनकर केतिक बाता। नाम तुम्हार

ह० जगत सुखदाता ॥ ५५ ॥ करहु कृपा
१४ जय जय जगस्वामी । वार अनेक
नमामि नमामी ॥ ५६ ॥ भौमवार करि
होम विधाना । धूप दीप नैवेद्य सुजाना
॥ ५७ ॥ मंगलदायककी लौ लावै ।
सा० जो मन राखै सोइ फल पावै ॥ ५८ ॥
जयति जयति जै जै जगस्वामी । सम-

रथ हौ सब अंतरजामी ॥ ५९ ॥
अंजनितनय नाम हनुमाना । सो तुल-
सीके प्राणसमाना ॥ ६० ॥ दोहा–
जय कपींश सुग्रीव नल, जय अंगद
हनुमान । रामलषन सीतासहित, सदा
करहु कल्यान ॥ वंदौं हनुमत नाम
यह, भौमवार परमान । ध्यान धरै नर

ह० निश्चय, पावै पद कल्यान ॥ जो यह
१५ साठिक पढ़ै नित, तुलसी कहै विचारि।
रहै न चिंता ताहि उर, साखी हैं
त्रिपुरारि ॥

इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी विरचित
सा० हनुमानसाठिका स्तोत्र समाप्त।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

इति बजरंगबाण ।

और

हनुमानसाठिका स्तोत्र समाप्त ।



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS